Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 SISRRJ | Volume 1 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

श्री कृष्णस्तु भगवान स्वयम्

सुनील कुमार सिंह
शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
मगध विश्वविद्यालय,
बोधगया, बिहार, भारत।

सारांश – भगवान् श्रीकृष्ण सर्वावतारी है। भगवान् के कुछ विशिष्ट गुणों के जो संकेत हैं, वे समग्र रूप से श्रीकृष्ण में विद्यमान हैं, जबकि अन्य अवतारियों में आंशिक रूप से है। अवतारों में श्रीकृष्ण को प्रमुख मानते हुए श्रीमद्भगवतकार ने इन्हें सर्वावतारी कहा है।

मुख्य शब्द –भगवान् श्रीकृष्ण, सर्वावतारी, हिन्दू, धर्मशास्त्र, महाभारत, ईश्वर, श्रीमद्भागवत।

हिन्दू धर्मशास्त्रों में श्रीकृष्ण सर्वाधिक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के रूप में उभर कर सामने आये हैं। सभी पुराणों एवं महाभारत में कृष्ण विषयक कथाओं ने अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया है। इन सभी ग्रन्थों में उनकी प्रशंसा इतनी अतिश्योक्तिपूर्ण है कि उन्हें अवतार मानता तो अलग ही बात रही, स्वयं भगवान ही कह दिया है। श्री कृष्णस्तु भगवान स्वयम्।

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप है। उन्हें निराकार रूप में ब्रह्म कहते हैं और सच्चिदानन्दधन विग्रह धारण करने पर वे ही भगवान कहे जाते हैं। यद्यपि भगवत्तत्त्व एक ही है तथापि प्रयोजनवश अर्थात् जीवों के प्रति अहैतुकी करुणा से प्रेरित हो पाद–विभूति में प्रकट होना ही उनका अवतार है। इसके स्वयंरूप, प्रकाश विलास, व्यूह, गुणावतार, लीलावतार, मन्वन्तरावतार, युगावतार प्राभाव, वैभव, अंश कला प्रभूति अनेक भेद हैं। जैसे बड़ा बोझ उठाने की क्षमतावास्था व्यक्ति अल्पपरिमाणों की वस्तुओं को उठाने में अपनी पूर्ण शक्ति का प्रयोग अनावश्यक समझकर नहीं करता, वैसे ही नित्य असीम शक्ति सम्पन्न ईश्वर की प्रयोजन के अनुसार ही अपनी शक्ति का प्रकाश करते हैं। अल्पज्ञ जीव प्रकाश के तारतम्य से प्रकाश के तत्त्व में न्यूनाधिकता की कल्पना कर लेते हैं, जो सर्वथा अनुचित है।

गुणविशिष्ट ईश्वर की प्रपत्ति के स्थूलरूप से दो साधन बतलाये गये हैं। पहला प्राकृत सम्बन्ध निवृति भावनामय है अर्थात् इस साधन में साधक यह भावना करता है कि उसका साध्य (निर्गुण परमात्मा) प्रकृति के सम्बन्ध से सर्वथा रहित है। दूसरा अप्राकृतगुण विभूति भावनामय है, इस साधन में साधक अप्राकृत अर्थात् असाधरण गुणों से विभूषित सगुण परमात्मा की शरणगति की भावना करता है। ईश्वर भी अपनी सत्यसन्धता के नियम के अनुसार निर्गुण–चिन्तक को प्राकृतगुण शून्य स्वरूप की ओर

आकृष्ट करते हैं और सगुण चिन्तक को अप्राकृत गुणविशिष्ट स्वरूप की प्राप्ति के साधन में प्रवृत्त करते हैं।

भगवान् शब्द की निष्पति 'भग' शब्द से 'मतुप्' प्रत्यय करने से होता है। ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य इन छः गुणों की समष्टि अर्थात् समुदाय की शास्त्रों में 'भग' संज्ञा होती है। इनमें सर्ववशीकारिता अर्थात् सब को वश में करने के सामर्थ्य का ही नाम 'ऐश्वर्य' है; मन्त्रादि के प्रभाव के समानप्रभाव को वीर्य कहते है वाणी मन एवं शरीर के सद्गुण विशिष्ट होने की प्रसिद्धि को ही 'यश' कहा है; सर्वविध सम्पत्ति का नाम ही 'श्री' है; सर्वज्ञता का नाम 'ज्ञान' है तथा संसार के सारे पदार्थों में अनासक्ति की ही वैराग्य संज्ञा है। ये सभी गुण जिनमें सर्वथा और सर्वदापूर्ण रूप से विद्यमान रहें उन्हीं का नाम भगवान् है। ये समग्र गुण श्रीकृष्ण में है। श्रीमद्भागवत में कहा है–

एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्।[1]

इस श्लोक से पूर्व भगवान् के अनेक अवतारों का वर्णन है। उनमें कृष्ण और बलराम का भी नामोंल्लेख है। यहाँ यह आशंका उत्पन्न होती है कि जब ये स्वयं भगवान् (परमात्मा) है, तो अवतारी कैसे ? इस भाव को स्पष्ट करते हुए गोस्वामी दामोदर जी शास्त्री लिखते है– इन दोनों वचनों की प्रमाणता रखने को उत्सर्गापवादभाव समझना चाहिए। जैसे ब्राह्मणों को दधि दिया जाय, किन्तु कौन्डिन्य गोत्रिय ब्राह्मणों को तक्र दिया जाय। यहाँ पर कौण्डियन्य भिन्न ब्राह्मणों को दधि मिला ऐसी मीमांसा की जाती है। क्योंकि तक्रदान रूप विशेष विधि से दधिदान रूप सामान्य विधि का संकोच किया गया है। इसी प्रकार प्रकृति में अवतरत्व कथन उत्सर्ग है ओर भगवत्ता कथन विशेष है। श्रीकृष्ण से भिन्न प्रकट तत्तरूप अवतार है और श्रीकृष्ण से भिन्न प्रकट तत्तरूप अवतार है और श्रीकृष्ण स्वयं, भगवान है। यह निर्णय शास्त्रसंगत है। लोक में भी ऐसा देखने में आता है। जैसे इक्षदण्ड में मूलपर्व ऊपरवाले पर्वो का मूल भी है, एवं स्वयं भी पर्व कहता है ऐसी ही पादविभूति में प्रकट होने से अवतार व्यवहार भी दोषादह नहीं है।[2]

कुछ ब्रह्मवादी लोग ऐसे है जो श्रीकृष्ण को भगवान् मानने में आपत्ति करते है। वे अवतार को नहीं मानते। केवल इतना ही मानते है कि श्रीकृष्ण एक महापुरुष और जीवनमुक्त थे, जिन्होंने अपने व्यक्ति चेतन को आत्मा में लीन कर दिया था। किन्तु उन ब्रह्मवादियों की धारणा भ्रामक है। 'गीता' वेदान्त दर्शन की प्रमुख आधारशिला है। उसमें अनेक स्थलों पर श्रीकृष्ण के जन्म का प्रतिपादन किया गया है।

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।

प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभाम्यात्ममायया।।[3]

अर्थात् यद्यपि मैं अजन्मा हूँ, अविनाशी हूँ, आत्मा और सर्व भूतों का ईश्वर हूँ, तथापि मैं अपनी प्रकृति को वश में करके अपनी ही शक्ति से जन्मग्रहण करता हूँ।

वेदान्तियों के आचार्य श्रीशंकराचार्य ने भी अपने गीताभाष्य में श्रीकृष्ण को परमेश्वर, माया के अधीश्वर, नियन्ता तथा साक्षात् नारायण माना है। श्रीशंकर के प्रसिद्ध अनुयायी स्वामी मधुसूदन सरस्वती ने यहाँ तक कहा है–

वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात्

पीताम्बरादरूणबिम्बफलाधरोष्ठात्।

पूर्णेन्दु सुन्दर मुखादर विन्दनेत्रात्

कृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने।।

अर्थात् नव–जलधर के समान श्यामकान्तिवाले, पूर्णचन्द्र के सदृश सुन्दर मुखार विन्दयुक्त, पके हुए बिम्ब फल के समान अधरवाले तथा पीताम्बर से सुसज्जित श्रीकृष्ण से परे भी यदि कोई तत्त्व है, तो मुझे उसका पता नहीं।

श्रीशंकराचार्य और मधुसूदन सरस्वती से भी बढ़कर ये ब्रह्मवादी कौन हो गये जो वेदान्त के नाम पर भगवान् को भी अस्वीकार कर रहे हैं।

श्रीकृष्ण ही परात्पर ब्रह्म है। योगादि साधनों से मुक्त होकर प्राणी ब्रह्म के रूप में श्रीकृष्ण को ही प्राप्त होता है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान स्वयं कहते हैं कि जो लोग उन्हें अक्षर, अनिर्देश्य एवं व्यक्त रूप से भजते हैं अथवा जो उनकी आराधना श्रीकृष्ण के रूप में करते हैं, उन दोनों को एक ही लक्ष्य की प्राप्ति होती है। लेकिन वहाँ उनके कहने के ढंग पर तो ध्यान देने योग्य है। कुछ मायावादी कहते हैं कि जो मेरी (श्रीकृष्ण की) उपासना करते हैं वे भी अन्त में इस मार्ग से होकर निर्गुण ब्रह्म को ही प्राप्त होते हैं। अर्थात् श्रीकृष्ण की आराधना से ब्रह्म की प्राप्ति होती है। इस प्रकार श्रीकृष्ण और ब्रह्म दोनों भिन्न–भिन्न है, श्रीकृष्ण स्वयं ब्रह्म नहीं है। किन्तु श्रीकृष्ण के कथन को यह स्पष्ट रूप से समझ लिया जाय तो ऐसी भ्रान्ति नहीं होगी। वे कहते है– 'ते प्राप्नुवन्ति मामेव।' अर्थात् जो लोग निर्गुण निराकार ब्रह्म की उपासना करते हैं, वे भी अन्त में मुझको (श्रीकृष्ण को) ही प्राप्त करते हैं।[4]

श्रीमद्भागवत में जब विभिन्न अवतारों का वर्णन किया गया, वहाँ स्पष्ट कह दिया गया है– 'एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्'। स्वयं पद से तात्पर्य है– 'अन्यनिरपेक्ष' अन्य अवतारों की भगवत्ता अन्य निरपेक्ष नहीं है। श्रीकृष्ण की भगवत्ता से ही उनकी भगवत्ता है। आवेश प्राभव, वैभव, परावस्थ भेद से अवतारों के चार प्रकार है। इनके मध्य में श्रीकृष्ण अवतारी है। परावस्थ अवतार नृसिंह, राम और कृष्ण में षड्गुण परिपूर्ण, भाव से विद्यमान है; किन्तु श्रीकृष्ण का माहात्म्य सर्वाधिक है।

सन्त्वतारा बहवः पुष्करनामस्य सर्वतो भद्रः।

कृष्णादन्यः को वा लतास्वपि प्रेमदो भवति।।[5]

ऐश्वर्य और माधुर्य एवं प्रेमाधिक्य से श्रीकृष्ण में भगवता का सर्वाधिक प्रकाश है।

रामादिमूर्तिषु कलानियमेंन तिष्ठन् नानावतारमकारोतद्

भुवनेषु किन्तु। कृष्णः स्वयं समभवत्परमः पुमान् यो,

गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।[6]

जय विजय जो सनकादि शाप से ग्रसित थे, श्रीकृष्ण के द्वारा निहित होने पर ही उसकी मुक्ति हुई। वैदूयमणि जिसप्रकार स्थानभेद से नील–जीतादि छवि को धारण करती है, उसी प्रकार भगवान्

अच्युत उपासना भेद से आपने स्वरूप को नाना आकार में प्रकाश किया करते हैं। यद्यपि परेश के हेतु – ये समस्त अवतार परिपूर्ण है तो भी उनमें अखिल शक्ति की अभिव्यक्ति नहीं है।[7]

श्रीकृष्ण के एकत्व में भी पृथक् प्रकाश है। यथा बड़े आश्चर्य की बात है एक ही श्रीकृष्ण ने एक ही शरीर में एक ही समय पृथक–पृथक गृह में सोलह हजार स्त्रियों का पाणिग्रहण किया।

चित्रं बतैततदेकेन वपुषायुगपत् पृथक्।

गृहेषु द्वयष्टसाहस्त्रं स्त्रिय एक उदावहत्।।[8]

उनके एकत्व में ही अंशित्व और विरुद्धशक्तित्व है, यथा तुमसे आविष्टचित्त भक्तगण बहुमूर्ति और एकमूर्ति रूप तुम्हारा भजन करते हैं। अक्रूर जी इस उक्ति में मूर्ति का अर्थ अंशित्व तथा बहुमूर्ति का अर्थ अंशत्व है।[9] श्रीकृष्ण के जन्म के पहले आकाशवाणी में भी यही कहा है कि–

'वसुदेवगृहे साक्षाद् भगवान् पुरुषः परः।

जनिष्यते.....।।[10]

भागवत में क्रिया और ज्ञान दोनों से युक्त अवतारी ही का निरूपण किया गया है। सर्वावतारी श्रीकृष्ण में अवतार ग्रहण करने की उनकी इच्छाशक्ति ही प्रेरक है–

अवतीर्णोऽसि भगवन् स्वेच्छोपात्तपृथग्बपुः।[11]

कभी वे भक्तों की इच्छानुसार भी रूप धारण करते हैं–

भक्तेच्छोपात्तरूपाय परमात्मन् नमोऽस्तुते।[12]

जीवों के कल्याण की भावना ही उनके अवतार का कारण है। पृथिवी का भार उतारने के लिए ही श्रीकृष्ण अवर्तीण होते हैं।

ईश्वरस्य विधिं को नु विद्युनोत्यन्यथा पुमान्।

भूमेर्भीरावताराय योऽवतीणो यदोःकुले।।[13]

भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं कहते हैं कि समय–समय पर धर्म की रक्षा के लिए और बढ़ते हुए अधर्म को रोकने के लिए मैं और भी अनेक शरीर ग्रहण करता हूँ। नृसिंह, वराह, आदि अवतार भिन्न–भिन्न हैं, लेकिन उन अवतारों और सर्वावतारी के विग्रह में कोई भेद नहीं है। श्रीकृष्ण के अवतार में उन समग्र अवतारों की स्थिति देखी जाती है।[14]

प्रत्येक अवतार उनके विशिष्ट कार्य तथा श्रीकृष्ण में उन गुणों का एवं क्रिया–कलापों का अन्तर्भाव देखा जाय।[15]

अवतार	**कार्य**	**श्रीकृष्ण में अन्तर्भाव**
1 नारद	अखण्ड ब्रह्मचर्य–पालन	सम्पूर्ण जीवन योगेश्वरेश्वर

2. वाराह	पृथ्वी का उद्धार	मृद्भक्षण, विदुरगृह शाक–भक्षण
3. देवर्षि नारद	कर्मो द्वारा कर्मबन्धन से मुक्ति का उपदेश	श्रीकृष्णद्वारा उद्धव को कर्मयोग का उपदेश
4. कपिल	सांख्यशास्त्र का आसुरि ब्राह्मण को उपदेश	कृष्ण द्वारा सांख्ययोग का उपदेश
5. मत्स्य	हीनजाति, मनुरक्षा	कृष्ण का भीम के साथ युद्ध के लिए जरासन्ध के पास जाना उग्रसेन की रक्षा
6. ह्यग्रीव	असुर–हनन	शिशुपालवध
7. कच्छप	मन्दराचलधारण	गोवर्द्धनधारण
8. नृसिंह	प्रह्लाद–रक्षा	पाण्डवरक्षा
9. हंस	ब्रह्मादि को उपदेश	उद्धव को ज्ञान
10. राम	तारका वध, रावणवध	पूतनावध, भौमासुर वध
11. परशुराम	ब्रह्मवृत्ति होने पर भी क्षत्रिय वध	ब्रह्मरूप से समान होने पर भी क्षत्रियवध
12. वामन	अदिति की प्रार्थना से अवतार–ग्रहण	देवकी प्रार्थना से अवतार–ग्रहण

इस प्रकार अन्य अवतारों के चरित श्रीकृष्ण में समग्र रूप से निहित है। भगवान् श्रीकृष्ण सर्वावतारी है। भगवान् के कुछ विशिष्ट गुणों के जो संकेत हैं, वे समग्र रूप से श्रीकृष्ण में विद्यमान हैं, जबकि अन्य अवतारियों में आंशिक रूप से है।

1. ऐश्वर्यप्रकाशक –

नृसिंहो जामदग्नश्च कल्की पुरुष एव च।
भगवन्क्तासंभ्रधानावैश्वर्यस्य प्रकाशकाः।।

अर्थात् नृसिंह, जामदग्नि और कल्कि आदि भगवान के ऐश्वर्य प्रकाशक है।

2. धर्मप्रकाशक –

नारदोऽथ तथा व्यासो वराहो बुद्ध एवं च।
धर्माणामेव वैविध्याहयी धर्मप्रदर्शकाः।।

अर्थात् नारद, व्यास, वराह और बुद्ध धर्मप्रदर्शक है।

3. कीर्ति प्रदर्शक –

रामोधन्वन्तरिर्यज्ञः पृथुः कीर्तिप्रदर्शिनः।

कीर्तिप्रदर्शक है राम, धन्वन्तरि, यज्ञ और पृथु।

4. श्रीप्रदर्शक –

बलरामो माहिनी च वामनः श्रीप्रधानकः।

बलराम, मोहिनी और वामन श्रीप्रदर्शक है।

5. ज्ञान प्रदर्शक –

दत्तात्रेय मत्स्यश्च कुमारः कपिलस्तथा।

ज्ञानप्रदर्शकाः एते विज्ञातव्या मनीषिभिः।।

अर्थात् दत्तात्रेय, मत्स्य, कुमार और कपिल ज्ञानप्रदर्शक है।

6. वैराग्यप्रदर्शक –

नारायणो नरश्चेति कूर्मश्च ऋषभस्तथा।

वैरागदर्शिनी श्रेयास्तत् कर्मानुसारतः।।

नर, नारायण, कूर्म, ऋषभ वैराग्य प्रदर्शन है। ये समस्त गुण श्रीकृष्ण में निहित है।[16]

भागवत में चार स्थानों पर भगवान् के अवतार की सूची प्रस्तुत की गयी है, किन्तु इस सूचियों के प्रतिपाद्य में परस्पर संगति नहीं बैठती। गम्भीर रूप से विचार करने पर कहा जा सकता है कि प्रथमस्कन्ध के अवतारों की गणना संख्या की दृष्टि से है।[17] अवताराहयसंख्येया हरेः।[18] द्वितीय स्कन्ध में अवतारों के स्वरूप का परिचय मात्र ही दृष्टि रही है। दशम स्कन्ध में कीर्ति की दृष्टि से वर्णन है।[19] एकादश स्कन्ध में अवतारों का वर्णन वैशिष्ट्य (तप, ज्ञान उपदेश आदि) की दृष्टि से किया गया है।[20] इस अध्याय के आरम्भ में ही भगवान् के अनन्त गुणों का निर्देश कर दिया गया है, जिससे पता चलता कि विभिन्न अवतारों का उल्लेख गुणप्रदर्शन मात्र के लिए है।

यो वा अनन्तस्य गुणनन्ता

ननुक्रमिष्यन् स तु बालबुद्धिः।

रजांसि भूमेर्गणयेत् कथञ्चित्

कालेन नैवाखिलशक्तिधाम्नः।।

अर्थात् भगवान् के अनन्त स्वरूप है। उनके गुण भी अनन्त है। जो यह सोचता है कि मैं उनके गुणों को गिन लूँगा, वह मूर्ख है, बालक है। यह तो सम्भव है कि कोई किसी प्रकार पृथिवी के धूलिकणों को गिन ले, परन्तु समस्त शक्तियों के आश्रय भगवान् के अनन्त गुणों का कोई कभी किसी प्रकार पार नहीं पा सकता।

उपर्युक्त सभी अवतारों में श्रीकृष्ण को प्रमुख मानते हुए श्रीमद्भगवतकार ने इन्हें सर्वावतारी कहा है।

संदर्भ संकेत :

1. श्रीमद्भागवत 1/3/28 पूर्वार्द्ध

2. 'कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्' शीर्षक निबन्ध, द्वारा– गोस्वामी दामोदरजी शास्त्री कल्याण, श्रीकृष्णांक, सं० 2064, पृ० 21–22

3. गीता, 4/6

4. 'कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्' निबन्धकार, द्वारा– श्रीकृष्णा जी वैरागी, श्रीकृष्णांक, कल्याण, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृ० 180

5. बिल्वमंगलकृत, कृष्णकर्णामृत

6. ब्रह्म संहिता 5/39

7. लघु भागवतामृत 1/41

8. श्रीमद्भागवत 10/69/2

9. श्रीमद्भागवत 10/40/7

10. श्रीमद्भागवत 10/1/23

11. श्रीमद्भागवत 11/11/28

12. श्रीमद्भागवत 10/59/25 उत्तरार्द्ध

13. श्रीमद्भागवत 10/49/28

14. श्रीमद्भागवत 10/50/9–10

15. भगवांस्तदभिप्रेत्य कृष्णो योगेश्वरेश्वरः।
वयस्यैरावृतस्तत्र गतस्तत्कर्मसिद्धये।। श्रीमद्भागवत 10/22/8

16. श्रीमद्भागवत में कृष्ण का स्वरूप, डॉ० वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी कल्याण, 55 वर्ष, अंक 4

17. श्रीमद्भागवत 1/3/6–25

18. श्रीमद्भागवत 1/3/26

19. श्रीमद्भागवत 2/7/1–38

20. श्रीमद्भागवत 11/4 सम्पूर्ण अध्याय